दुनिया

मैं कहुं ना कहूं ये फसाना ढूंढ लेती है,
बड़ी शातिर है ये दुनिया बहाना ढूंढ लेती है।

हकीकत भी ज़िद पे अड़ी है चूर–चूर करने को,
ये आँखें फिर सपना सुहाना ढूंढ लेती है।

कोशिशें तमाम होती हैं मुझे विराने मिले,
जिंदगी हर राह पे एक नया तराना ढूंढ लेती है।

बहुत धोखे हैं जमाने में वफा कौन करे,
दोस्ती पुराने दोस्तों की आज भी याराना ढूंढ लेती है।

इत्तेफाकन उनकी गली से गर गुज़र गए हम,
कायनात सारी उसमें भी कोई अफसाना ढूंढ लेती है।

यूँ तो आज सब हैं मस्त अपनी अपनी दुनिया में फिर भी,
त्योहारों में रिश्तेदारियाँ अपना घराना ढूंढ लेती है।

मैं लाख बचाऊँ खुद को दुनिया के गमों से मगर,
चुनौतियाँ जिंदगी की मुझे रोज़ाना ढूंढ लेती है।

बात–बेबात में अपनी हर बात में शायरा 'स्वप्न',
जब बोलती है अपना अंदाज़ शायराना ढूंढ लेती है।

स्वपनिल लौवंशी
कनिष्ठ सहायक